पाठ 5

बाबा का घोड़ा

यह भी जानें

- यह एक पौराणिक कथा है।
- घोड़ा विश्व का सबसे प्राचीन पालतू पशु है।

बाबा भारती गाँव के बाहर बने एक छोटे से मंदिर में रहते थे और वहीं भगवान की आराधना करते। बाबा के पास एक बहुत ही सुंदर व बलवान घोड़ा था। बाबा उसे 'सुल्तान' कहकर बुलाते थे। वे उसका बहुत ख्याल रखते थे। बाबा को सुल्तान के अलावा किसी और चीज़ की चाह नहीं थी। उनके चेहरे पर हमेशा संतोष के भाव दिखाई पड़ते थे। उनका मुख रोशनी सा जगमगाता रहता था। बाबा भारती और उनके घोड़े सुल्तान की चर्चा दूर-दूर तक थी। कई राजा-विद्वानों ने सुल्तान को हासिल करने की कोशिश की, लेकिन उसे पा न सके। बाबा सुल्तान पर बैठकर रोज़ आठ-दस मील का चक्कर लगाते थे। दोनों की शोभा देखते बनती थी। बाबा सुल्तान को हमेशा अपनी नज़रों के सामने ही रखते थे।

खड़गसिंह उस इलाके का कुख्यात डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर ही काँपते थे। सुलतान की कीर्ति भी खड़गसिंह के कानों तक पहुँच गई। खड़गसिंह ने सुलतान को देखा, तो उसे देखता ही रह गया। अब वह सुलतान को किसी भी हाल में पाना चाहता था। खड़गसिंह घोड़ा पाने के लिए बाबा भारती के पास जा पहुँचा। वह बाबा को डरा-धमकाकर सुल्तान को पाना चाहता था। लेकिन बाबा डरे नहीं। उनके मुख पर डर की जगह संतोष के भाव थे। खड़गसिंह को खाली हाथ ही वापस जाना पड़ा। खड़गसिंह घोड़ा पाने की योजना बनाने में लग गया।

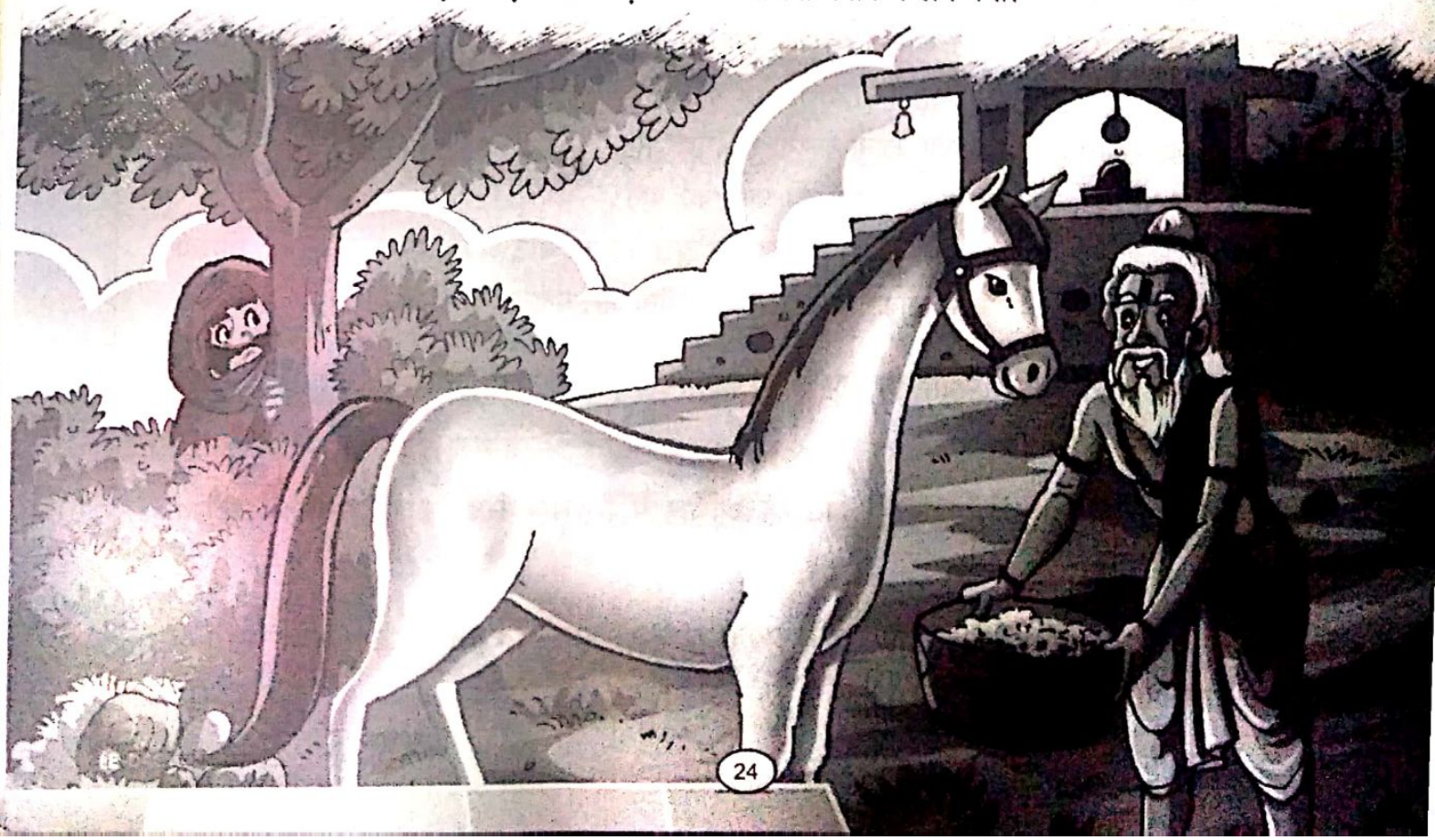

Scanned by CamScanner

एक दिन संध्या के समय बाबा सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। तभी उन्हें जंगल में पेड़ के किनारे कंबल ओढ़े एक व्यक्ति दिखाई दिया। उसे देखकर बाबा को दया आ गई और वे रुक गए।

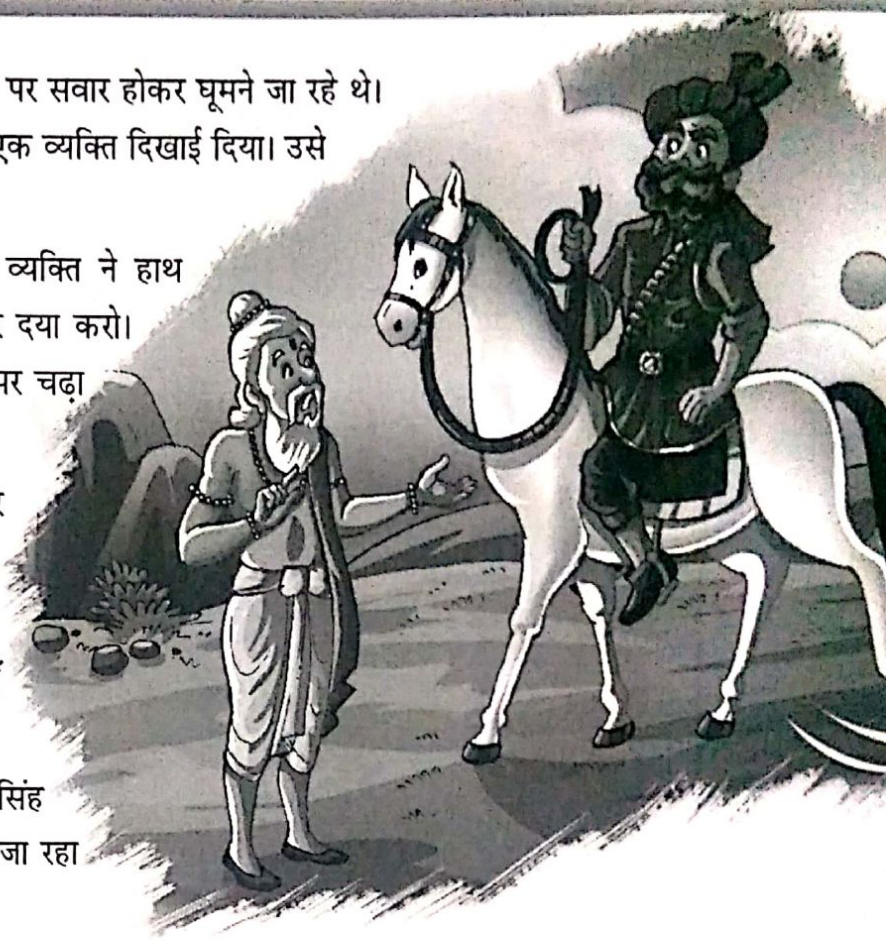

घोड़े से उतरकर बाबा व्यक्ति के पास गए। व्यक्ति ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। मुझे यहाँ से तीन मील दूर जाना है। मुझे घोड़े पर चढ़ा लो। ईश्वर आपका भला करेगा।"

बाबा ने दया कर उस बीमार व्यक्ति को घोड़े पर बैठा दिया। लेकिन घोड़े पर बैठते ही बीमार व्यक्ति लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगा।

बाबा ने उसे रोका और बोले, "सुनो, घोड़ा कहाँ लिए जा रहे हो?"

व्यक्ति कंबल हटाते हुए बोला, "बाबा, मैं खड़गसिंह हूँ और अब मैं आपका घोड़ा अपने साथ लिए जा रहा हूँ।"

बाबा संतोष भाव से बोले, "मैं तुम्हें इसे वापस करने के लिए नहीं कहूँगा। लेकिन बस इतना ही कहना चाहूँगा कि इस घटना के बारे में किसी को न बताना।"

क्यों?, खड़गसिंह ने पूछा।

बाबा के चेहरे पर अभी भी संतोष के भाव थे। उन्होंने सुल्तान की ओर से मुँह मोड़ लिया, जैसे उससे कोई नाता ही न हो। जाते-जाते बाबा बोले, "खड़गसिंह लोगों को अगर इस घटना का पता चल गया, तो वह किसी गरीब का विश्वास नहीं करेंगे और न ही कभी मदद करेंगे।" यह कहकर बाबा चले गए।

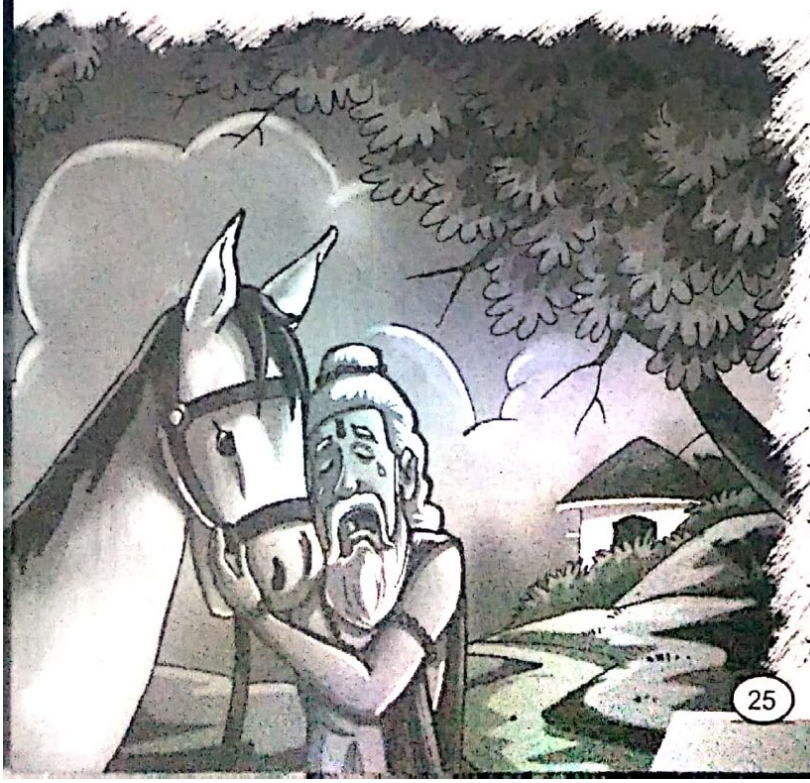

खड़गसिंह भी घोड़ा लेकर चला गया। खड़गसिंह के कानों में अभी भी बाबा के अंतिम शब्द गूंज रहे थे। वह सोच रहा था कि जिस घोड़े को वे अपनी नज़रों से दूर नहीं करते थे। आज उसके जाने पर भी उनके मुख पर कोई दुख नहीं था। तब भी वे गरीबों के बारे में सोच रहे थे। ऐसा मनुष्य महान है।

खड़गसिंह उसी रात बाबा के मंदिर में गया और सुल्तान को वापस बाँध आया। सुबह जब बाबा ने सुल्तान को देखा तो उनसे रहा न गया। वे सुल्तान से लिपटकर काफी देर तक रोते रहे।

फिर संतोष से बोले, "अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।"

Scanned by CamScanner

नए शब्द

विद्वान

ज्ञानी

मनुष्य

आदमी

मुख

चेहरा

कीर्ति

प्रसिद्धि

आराधना

पूजा-पाठ कर ईश्वर को याद करना

दुखियारा

दुखी व्यक्ति

अभ्यास

1. दिए गए वाक्यों के सामने सही (✓) और गलत (×) का निशान लगाएँ।

क. बाबा भारती अपने घोड़े को सुल्तान कहकर बुलाते थे। ☐

ख. बाबा भारती ने अपना घोड़ा स्वयं खड़गसिंह को दे दिया। ☐

ग. खड़गसिंह बाबा भारती की तरह बनना चाहता था। ☐

घ. घोड़े के जाने पर भी बाबा के चेहरे पर संतोष के भाव थे। ☐

ङ. घोड़ा वापस मिलने पर बाबा उससे लिपटकर काफी देर तक रोए। ☐

च. खड़गसिंह साधु के वेश में बाबा से मिला। ☐

Scanned by CamScanner

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. बाबा भारती अपना समय कैसे बिताते थे?

ख. खड़गसिंह बाबा के पास क्यों गया?

ग. खड़गसिंह ने बाबा भारती से घोड़ा कैसे हासिल किया?

घ. जाते-जाते बाबा भारती ने खड़गसिंह से क्या कहा?

3. कहानी के आधार पर निम्न की विशेषताएँ लिखिए।

क. बाबा भारती ख. खड़गसिंह ग. सुल्तान

4. निम्न पाठांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

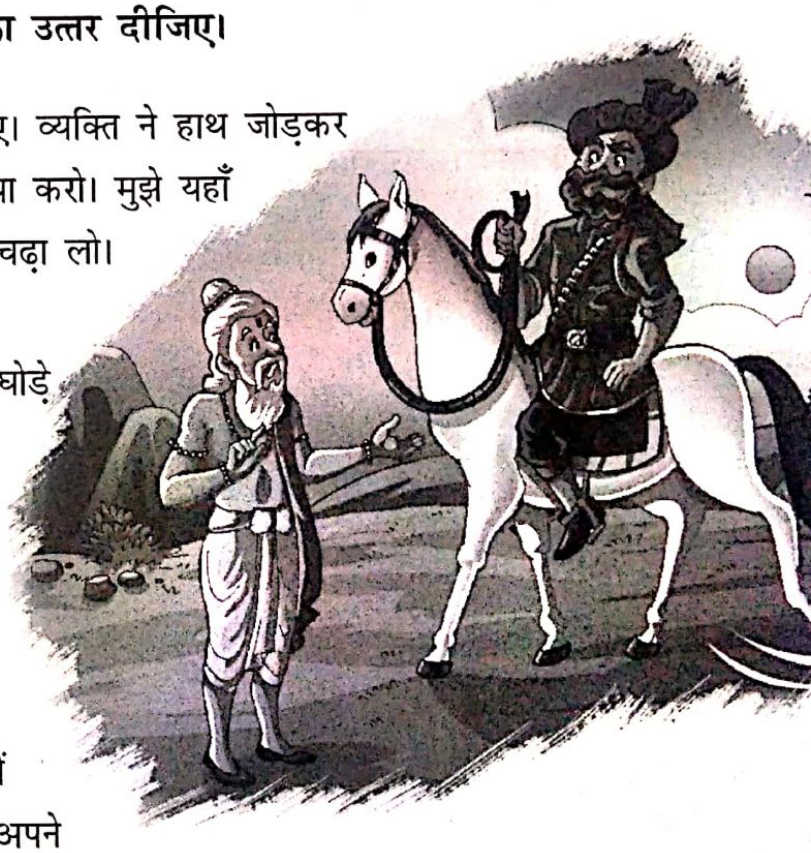

घोड़े से उतरकर बाबा व्यक्ति के पास गए। व्यक्ति ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। मुझे यहाँ से तीन मील दूर जाना है। मुझे घोड़े पर चढ़ा लो। ईश्वर आपका भला करेगा।"

बाबा ने दया कर उस बीमार व्यक्ति को घोड़े पर बैठा दिया। लेकिन घोड़े पर बैठते ही बीमार व्यक्ति लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगा।

बाबा ने उसे रोका और बोले, "सुनो, घोड़ा कहाँ लिए जा रहे हो?"

व्यक्ति कंबल हटाते हुए बोला, "बाबा, मैं खड़गसिंह हूँ और अब मैं आपका घोड़ा अपने साथ लिए जा रहा हूँ।"

क. बाबा भारती घोड़े से क्यों उतरे?

ख. बीमार व्यक्ति को कहाँ जाना था?

ग. घोड़े पर बैठा व्यक्ति कौन था?

घ. घोड़े पर बैठते ही व्यक्ति ने क्या किया?

ङ. उपर्युक्त अंश किस पाठ से लिया गया है?

Scanned by CamScanner